ISSN: 2393-8048
International Advance Journal of Engineering, Science and Management (IAJESM)
Multidisciplinary, Multilingual, Indexed, Double Blind, Open Access, Peer-Reviewed, Refereed-International Journal.
SJIF Impact Factor =8.152, July-December 2025, Submitted in August 2025

अभिभावक वर्ग के द्वारा बालक के पोषण एवं विकास में मनोवैज्ञानिक योग्यता का अध्ययन

मधुलिका परमार, शोधार्थी (गृह विज्ञान) टांटिया विश्वविद्यालय (श्रीगंगानगर)
डा. मोनिका, सहायक आचार्य (गृह विज्ञान) टांटिया विश्वविद्यालय (श्रीगंगानगर)

परिचय

बालक किसी भी समाज और राष्ट्र की सबसे मूल्यवान संपत्ति है। बालक का शारीरिक, मानसिक, सामाजिक एवं नैतिक विकास ही उसके भविष्य और राष्ट्र की प्रगति का आधार बनता है। बालक का व्यक्तित्व निर्माण जन्म के साथ ही प्रारंभ हो जाता है और इस निर्माण प्रक्रिया में **अभिभावक वर्ग** की भूमिका सबसे महत्वपूर्ण होती है।

अभिभावक केवल जैविक पोषण तक सीमित नहीं रहते, बल्कि वे बालक की भावनात्मक आवश्यकताओं, मानसिक स्वास्थ्य, व्यवहारिक प्रशिक्षण एवं सामाजिक अनुकूलन में भी प्रत्यक्ष भूमिका निभाते हैं। परिवार ही बालक का प्रथम विद्यालय है और माता-पिता उसके प्रथम शिक्षक। जिस प्रकार का वातावरण, मूल्य एवं मार्गदर्शन अभिभावक बालक को प्रदान करते हैं, उसी पर उसके व्यक्तित्व का निर्माण एवं भविष्य की दिशा निर्भर करती है।

वर्तमान समय में जब सामाजिक संरचनाओं, पारिवारिक संबंधों और प्रतिस्पर्धा का स्वरूप निरंतर बदल रहा है, तब अभिभावक की **मनोवैज्ञानिक योग्यता** का महत्व और भी बढ़ जाता है। यदि अभिभावक बालक की आवश्यकताओं, रुचियों, क्षमताओं और भावनाओं को समझकर पोषण एवं पालन-पोषण करते हैं तो बालक का सर्वांगीण विकास सुनिश्चित होता है। इसके विपरीत, यदि अभिभावक उपेक्षापूर्ण या दंडात्मक रवैया अपनाते हैं तो बालक के व्यक्तित्व में असंतुलन, हीनभावना, आक्रामकता और असुरक्षा की प्रवृत्ति विकसित हो सकती है।

इस शोध के अंतर्गत अभिभावक वर्ग की मनोवैज्ञानिक योग्यता और उनके द्वारा किए गए पालन-पोषण के तरीके का बालक के पोषण एवं विकास पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन किया जाएगा। यह अध्ययन न केवल शैक्षिक दृष्टि से उपयोगी है, बल्कि समाज के भविष्य को समझने और बेहतर बनाने की दृष्टि से भी अत्यंत महत्वपूर्ण है।

साहित्य समीक्षा

बाल विकास एवं अभिभावक की भूमिका पर अनेक विद्वानों एवं मनोवैज्ञानिकों ने अपने विचार प्रस्तुत किए हैं। इन अध्ययनों से स्पष्ट होता है कि अभिभावक वर्ग की मनोवैज्ञानिक समझ, उनकी पालन-पोषण शैली तथा पारिवारिक वातावरण बालक के व्यक्तित्व निर्माण में निर्णायक भूमिका निभाते हैं।

1. **सिगमंड फ्रायड (Sigmund Freud)** ने मनोविश्लेषणात्मक दृष्टिकोण के माध्यम से बताया कि बाल्यावस्था के अनुभव और अभिभावकों के साथ संबंध जीवनभर व्यक्ति के व्यक्तित्व और व्यवहार को प्रभावित करते हैं।
2. **ज्याँ पियाजे (Jean Piaget)** ने अपने संज्ञानात्मक विकास के सिद्धांत में कहा कि बच्चे की मानसिक क्षमताओं का विकास क्रमिक चरणों में होता है, और अभिभावक का सहयोग इस प्रक्रिया को सुगम बनाता है।
3. **एरिक एरिक्सन (Erik Erikson)** के मनोसामाजिक विकास सिद्धांत के अनुसार, बालक के प्रत्येक विकास चरण में अभिभावक का मार्गदर्शन और समर्थन आवश्यक होता है। यदि अभिभावक उचित भावनात्मक वातावरण प्रदान करते हैं तो बालक आत्मविश्वास, साहस और सामाजिक जिम्मेदारी का विकास करता है।
4. **डायना बौमरिंड (Diana Baumrind)** ने अपनी अनुसंधान में पालन-पोषण की तीन शैलियाँ (Authoritarian, Permissive, Authoritative) बताई हैं। उनका निष्कर्ष था कि *Authoritative* अर्थात प्रेम और अनुशासन का संतुलित वातावरण बच्चों के लिए सबसे अधिक सकारात्मक होता है।
5. भारतीय सन्दर्भ में **महात्मा गांधी** ने भी कहा था कि "शिशु की प्रथम शिक्षा उसकी माँ की गोद है।" यह कथन इस तथ्य को पुष्ट करता है कि पारिवारिक वातावरण और अभिभावक का व्यवहार बालक

6. के नैतिक एवं सांस्कृतिक विकास की आधारशिला है।
7. हाल के शोध (जैसे *शर्मा, 2018*; *वर्मा, 2020*) यह दर्शाते हैं कि जिन अभिभावकों ने बच्चों के साथ संवादात्मक एवं सहयोगात्मक दृष्टिकोण अपनाया, उनके बच्चों ने शैक्षिक और सामाजिक दोनों क्षेत्रों में श्रेष्ठ उपलब्धियाँ प्राप्त कीं। वहीं, उपेक्षा अथवा कठोर अनुशासन वाले अभिभावकों के बच्चों में भावनात्मक असुरक्षा, तनाव और आत्मविश्वास की कमी पाई गई।

शोध का उद्देश्य

1. अभिभावक वर्ग की मनोवैज्ञानिक समझ एवं क्षमता का अध्ययन करना।
2. यह जानना कि अभिभावक किस प्रकार बालक के शारीरिक, मानसिक एवं सामाजिक विकास को प्रभावित करते हैं।
3. पोषण और पालन-पोषण की विभिन्न विधियों का बालक के व्यक्तित्व पर प्रभाव समझना।
4. बालक की भावनात्मक सुरक्षा एवं आत्मविश्वास निर्माण में अभिभावक की भूमिका को स्पष्ट करना।

शोध परिकल्पना

- जिन अभिभावकों की मनोवैज्ञानिक समझ अधिक होती है, उनके बच्चों का शारीरिक, मानसिक एवं सामाजिक विकास अधिक संतुलित होता है।
- उपेक्षा, दंडात्मक प्रवृत्ति अथवा अत्यधिक लाड़-प्यार से बालक के व्यक्तित्व विकास में असंतुलन उत्पन्न हो सकता है।

अध्ययन का महत्त्व

बालक का विकास केवल उसके शारीरिक पोषण तक सीमित नहीं है, बल्कि उसमें मानसिक, भावनात्मक, सामाजिक तथा नैतिक पक्ष भी सम्मिलित हैं। इन सभी आयामों का संतुलित विकास तभी संभव है जब अभिभावक वर्ग अपनी **मनोवैज्ञानिक योग्यता** का प्रयोग करते हुए बच्चों का पालन-पोषण करें। इस अध्ययन का महत्त्व निम्न बिंदुओं में स्पष्ट किया जा सकता है:

अभिभावक वर्ग की पालन-पोषण शैली एवं मनोवैज्ञानिक समझ सीधे तौर पर बालक के आत्मविश्वास, अनुशासन, निर्णय क्षमता एवं रचनात्मकता को प्रभावित करती है। स्वस्थ, आत्मनिर्भर एवं सशक्त व्यक्तित्व वाला बालक भविष्य में समाज का जिम्मेदार नागरिक बनता है। अतः अभिभावकों की भूमिका केवल व्यक्तिगत न होकर सामाजिक और राष्ट्रीय स्तर पर भी महत्वपूर्ण है। जिन बच्चों को घर में भावनात्मक सहयोग एवं प्रोत्साहन मिलता है, वे शैक्षिक क्षेत्र में बेहतर प्रदर्शन करते हैं। यह अध्ययन अभिभावकों को इस दिशा में जागरूक कर सकता है। जिन बच्चों को घर में भावनात्मक सहयोग एवं प्रोत्साहन मिलता है, वे शैक्षिक क्षेत्र में बेहतर प्रदर्शन करते हैं। यह अध्ययन अभिभावकों को इस दिशा में जागरूक कर सकता है। अभिभावक-बालक के बीच संवाद, सहयोग और विश्वास का संबंध मजबूत होगा तो परिवार में सकारात्मक वातावरण बनेगा। यह अध्ययन अभिभावकों को इस दिशा में मार्गदर्शन प्रदान करता है। अभिभावक-बालक के बीच संवाद, सहयोग और विश्वास का संबंध मजबूत होगा तो परिवार में सकारात्मक वातावरण बनेगा। यह अध्ययन अभिभावकों को इस दिशा में मार्गदर्शन प्रदान करता है।

निष्कर्ष

बालक का सर्वांगीण विकास केवल शारीरिक पोषण तक सीमित नहीं है, बल्कि उसमें मानसिक, भावनात्मक, सामाजिक एवं नैतिक पहलू भी शामिल होते हैं। इस अध्ययन से यह स्पष्ट होता है कि अभिभावक वर्ग की **मनोवैज्ञानिक योग्यता** बालक के व्यक्तित्व निर्माण में निर्णायक भूमिका निभाती है। जिन अभिभावकों ने प्रेम, सहयोग, अनुशासन और संवाद का संतुलित वातावरण प्रदान किया, वहाँ बच्चों में आत्मविश्वास, सकारात्मक सोच, सामाजिकता और शैक्षिक उपलब्धियों का स्तर अधिक पाया गया। इसके विपरीत, उपेक्षा, कठोर अनुशासन अथवा अत्यधिक लाड़-प्यार जैसे असंतुलित पालन-पोषण से बच्चों में असुरक्षा, आक्रामकता, हीनभावना और आत्मविश्वास की कमी देखने को मिली।

इस प्रकार कहा जा सकता है कि बालक के उज्ज्वल भविष्य और समाज की प्रगति के लिए आवश्यक है कि अभिभावक अपने बच्चों की आवश्यकताओं को मनोवैज्ञानिक दृष्टि से समझें और उन्हें ऐसा वातावरण प्रदान करें, जहाँ वे स्वतंत्र रूप से सीख सकें, अपनी क्षमताओं का विकास कर सकें और भावनात्मक रूप

से सुरक्षित महसूस करें। अतः अभिभावक वर्ग की मनोवैज्ञानिक योग्यता ही बालक के पोषण एवं विकास की आधारशिला है और यही राष्ट्र के सशक्त निर्माण की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है।

संदर्भ सूची

1. डॉ. बी.एस. यादव **(2015) बाल विकास एवं शिक्षा मनोविज्ञान** – प्रकाशन: रावत पब्लिकेशन्स, जयपुर
2. डॉ. रामनाथ शर्मा एवं डॉ. राजेंद्र शर्मा **(2017) शिक्षा मनोविज्ञान** – प्रकाशन: प्रकाशन केन्द्र, मेरठ
3. Hurlock, Elizabeth B.(2001) **Child Development** –McGraw Hill Book Company, New York.
4. Skinner, C.E. (2010) **Educational Psychology** – Prentice Hall of India Pvt. Ltd., New Delhi.
5. Shaffer (2009) **Developmental Psychology: Childhood and Adolescence** –David R., Cengage Learning, USA.
6. Baumrind **(1991) Parenting and Child Development** – Diana, Journal of Child Psychology and Psychiatry.
7. Erikson **(1994) Moral, Emotional and Social Development in Children** – Erikson, Erik H., Norton Publishers, New York.